भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

पाठ: साखी (कबीर) कायपत्रिका को तिथि: ----------

संसाधन व्यक्ति: श्रीमती बीना स्टिफन तिथि:----------

विद्यार्थी का नाम :---------- कक्षा : X ब

	प्रश्नोत्तर	
प्र.1	मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है ?	
उ.1	मीठी वाणी बोलने से सुननेवाले के मन को सुख मिलता है और अपने को शीतलता बोलकर म शब्दों मधुर साथ के किसी अथात है मिलती (शांति) शब्दों कटु साथ के किसी अगर विपरीत इसके। है होता प्राप्त आत्मसंतोष म बोलते ह तो स्वयं का मन भी दुखी रहता है।	
प्र2.	दीपक दिखाई देने पर अँधेयारा कैसे मिट जाता है ? साखी के संदभ म स्पष्ट कोजिए।	
उ.2	दीपक जहाँ भी रखा होता हैहै। देता कर नष्ट को अंधकार प्रकाश उसका , उसी प्रकार जब हृदय म ज्ञान रूपी दीपक जल जाता है तो अज्ञान रूपी अंधकार नष्ट हो जाता है।	
प्र.3	ईश्वर कण पाते देख नहीं क्यों उसे हम पर ,हैं व्याप्त म कण-?	
उ.3	ईश्वर संसार के कण,कारण के अज्ञान हम परंतु है हुआ बसा म कण- संसार के झूठे आकषण तथा मोह आदि के कारण उसे अनुभव नहीं कर पाते।	
प्र4.	संसार म सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक ह ?इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कोजिए।	
उ4.	संसार म स्वाथी लोग ही सुखी ह और दूसरों का चिंता करनेवाले दुखी ह ।'सोना' का आशय है – प्रभु के प्रति उदासीन होना। 'जागना' का आशय है - प्रति के भगवान ने ।कवि होना आस्थावान और लगनशील प्रति के प्रभु उदासीन संसारी लोगों के सुखों को व्यथ बताने के लिए उन्ह सोया हुआ बताया	

	है ।प्रभु– है जागरण ,है जीवन भी म तड़प का भक्त-यह बताया है।	
प्र5.	अपने स्वभाव को निमल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?	
उ5.	कबीर का सलाह है ।क ऐसे व्यक्ति को हमेशा अपने आस आपका जो रखो पास- ,हो दोष जो म आचरण आपके । हो उठाता उँगली पर कमज़ोरियाँ और कमियाँ ऐसा । हो चलता गिनाता बुराइयाँ आपको ।जो हो करता इशारा ओर उनको अपने को खराबियाँ उन अपनी आपको व्यक्तिसे दूर करने का अवसर देता है , का सुधार उनम आपको से टोको-टोका उसको । होती नहों भी पता आपको जो मन आपके तरह ।इस है मिलता अवसर का मैल दूर होता जाता है ।	
प्र6.	'ऐकै आषेर पीव काहोइ पंडित सु पढ़ै ,' – इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहते ह ?	
उ6.	बहुत सारी पुस्तकों से केवल शास्त्रीय ज्ञान पाकर कोई पंडित नहीं हो जाता। पंडित तो वही हो पाता है जो प्रेम करना सीख लेता है । यदि एक अक्षर पीव प्रियतम)/ईश्वरअथात है जाता हो पंडित वह तो ले पढ़ कोई का(अपने प्रिय ईश्वर से प्रेम करने का अनुभव जिसे हो जाए वह सचमुच पंडित हो जाता है ।	